

## पद १३१

(राग: खमाज जिल्हा - ताल: धुमाळी)

क्षमा करा क्षमा करा। जड भूताकृति ईश्वरा॥ध्रु॥ अस्ति भाति  
प्रेम ज्वाला। निपजवि नभाऽनिल जल शिला॥१॥ जड म्हणोनि  
करि जो निंदा। ईश्वर नरका भोगवि सदा॥२॥ भूत कृतिही  
आत्मसत्ता। नाहीं मायिक मिथ्या (द्वैत) वार्ता॥३॥ सत्य मिथ्या  
तर्क वाद। नुपजे कल्पांति हा भेद॥४॥ भेदाभेदा भासवि राजा।  
स्फुरवि (मिरवी) अखंड आत्मतेजा॥५॥ निमित्त उपादान शास्त्र।  
भ्रांत मतां पाशुपतास्त्र॥६॥ जागा जागा पंडित जांगा। वेद शास्त्रें  
देतील दगा॥७॥ करी चिन्मार्तांड प्रमाण। एक पूर्ण शिव चैतन्य॥७॥